C.B.S.E

कक्षा : 10

विषय: हिंदी A

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग, और घ।

2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रम से लिखिए।

4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।

5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।

6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

खंड - क

[अपठित अंश]

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (2×4=8) (1×2=2) [10]

हमें स्वराज्य तो मिल गया, परन्तु सुराज्य अभी हमारे लिए एक सुखद स्वप्न ही है। इसका प्रधान कारण यह है कि देश को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से कठोर परिश्रम करना हमने अभी तक नहीं सीखा। श्रम का महत्त्व और मूल्य हम जानते ही नहीं। हम अब भी आराम-तलब हैं। हाथों से यथेष्ट काम करने में रूचि नहीं है। हाथों से काम करने को हम हीन समझते हैं। हम कम से कम काम द्वारा जीविका चाहते हैं। हम यही सोचते रहते हैं कि किस तरह काम से बचा जाए। यह दूषित मानसिकता राष्ट्र की आत्मा में जा बैठी है और वहाँ से हटती नहीं है। यदि हम इससे मुक्त नहीं होते और

समाज से हम जितना पा रहे हैं या लेना चाहते हैं उससे कई गुना अधिक उसे अपने कठोर श्रम से नहीं देते, देश आगे नहीं जा सकता और स्वराज्य सुराज्य में परिणत नहीं हो सकता।

1. गद्यांश में सुखद स्वप्न किसे और क्यों कहा गया है?

   उत्तर : गद्यांश में सुखद स्वप्न सुराज्य को कहा गया है क्योंकि देश को सुराज्य में परिणित करने के लिए हमने अभी तक कठोर श्रम करना सीखा नहीं है।

2. देश को समृद्ध बनाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

   उत्तर : देश को समृद्ध बनाने के लिए हमें श्रम का मूल्य पहचानकर कठोर श्रम करना चाहिए।

3. कौन-सी दूषित मानसिकता देश की आत्मा में जा बैठी है?

   उत्तर : हम आराम-तलब बन गए हैं। हाथों से काम करने में हमारी रूचि नहीं रह गई है उससे हम हीनता अनुभव करते हैं। हम कम काम और अधिक आराम के आदी हो गए हैं। कामचोरी और आराम करने की ये दूषित मानसिकता ही देश की आत्मा में जा बैठी है।

4. स्वराज्य सुराज्य में कब परिणत होगा?

   उत्तर : देश में सुराज्य लाने के लिए लोगों में परिश्रम के प्रति आदर भाव जगाना जरूरी है। हमें श्रम का मूल्य पहचानना होगा और हाथों से काम करने की आदत डालनी होगी। कठोर परिश्रम से ही स्वराज्य सुराज्य में परिणत होगा।

5. हमें किस बात में रूचि नहीं है?

उत्तर : हमें हाथों से काम करने में रूचि नहीं है।

6. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए 'परिश्रम का महत्त्व' उचित शीर्षक है।

खंड - ख

[व्यावहारिक व्याकरण]

प्र. 2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। (1x4=4)

(क) वह सवेरे उठते ही नहा-धोकर मंदिर चला जाता है। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जैसे ही वह सवेरे उठता है, वैसे ही नहा-धोकर मंदिर चला जाता है।

(ख) वह कार तेजी से आकर खंभे से टकरा गई। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : वह कार तेजी से आई और खंभे से टकरा गई।

(ग) वह मेधावी छात्र है इसलिए उसे सफलता अवश्य मिलेगी। (रचना की दृष्टि से वाक्य पहचानिए)

उत्तर : संयुक्त वाक्य

(घ) उन्होंने जैसे ही शहनाई बजानी शुरु की, सब उसकी ध्वनि में मग्न हो गए। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : उन्होंने शहनाई बजानी शुरु की और सब उसकी ध्वनि में मग्न हो गए।

प्र. 3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए। (1x4=4)

(क) मैं जब वहाँ पहुँचा तो वर्षा हो रही थी।

उत्तर : मैं - उत्तमपुरुष वाचक सर्वनाम, एकवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक।

(ख) तुम्हें भागवत ध्यान से पढ़नी चाहिए।

उत्तर : तुम्हें - सर्वनाम, मध्यमपुरुष, पुल्लिंग, एकवचन।

(ग) पानवाला खुशमिजाज आदमी था।

उत्तर : खुशमिजाज - विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिंग, एकवचन।

(घ) अरे, तुम भी आ गए!

उत्तर : अरे - विस्मयादि बोधक, एकवचन, पुल्लिंग।

प्र. 4. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। (1x4=4)

(क) मैं दरवाज़ा नहीं खोल सकता। (कर्मवाच्य)

उत्तर : मुझसे दरवाज़ा नहीं खोला जा सकता।

(ख) आओ आज नहर में तैर लें। (भाववाच्य)

उत्तर : आओ, नहर में तैरा जाए।

(ग) रमा क्षण भर के लिए भी शांत नहीं बैठती है। (भाववाच्य)

उत्तर : रमा से क्षण भर के लिए भी शांत नहीं बैठा जाता।

(घ) श्रद्धालु काशीवासियों द्वारा इस सभा का आयोजन किया जाता है। (कर्तृवाच्य)

उत्तर : श्रद्धालु काशीवासी इस सभा का आयोजन करते हैं।

प्र. 5. निम्नलिखित काव्यांशों में प्रयुक्त रस पहचानिए। (1x4=4)

1. विंध्य के वासी उदासी तपोव्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे
   गौतम तीय तरी तुलसी सो कथा सुनि भे मुनिवृंद सुखारे।
   ह्वै हैं सिला सब चंद्रमुखी, परसे पद मंजुल कंज तिहारे
   कीन्हीं भली रघुनायक जू जो कृपा करि कानन को पगु धारे।।
   उत्तर : हास्य रस

2. रे अश्वसेन! तेरे अनेक वंशज हैं छिपे नरों में भी,
   सीमित वन में ही नहीं, बहुत बसते पुरग्राम-घरों में भी।
   ये नर-भुजंग मानवता का, पथ कठिन बहुत कर देते हैं,
   प्रतिबल के वध के लिए नीच, साहाय्य सर्प का लेते हैं।
   उत्तर : वीर रस

3. 'वियोग श्रृंगार' का स्थायी भाव क्या है?
   उत्तर : रति

4. 'घृणा' किस रस का स्थायी भाव है?
   उत्तर : वीभत्स रस

खंड-ग

[पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पुस्तक]

प्र. 6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (3×2=6)

फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था। मुझे 'परिमल' के वे दिन याद आते हैं

जब हम सब एक पारिवारिक रिश्ते में बँधे जैसे थे जिसके बड़े फादर बुल्के थे। हमारे हँसी-मजाक में वह निर्लिप्त शामिल रहते, हमारी गोष्ठियों में वह गंभीर बहस करते, हमारी रचनाओं पर बेबाक राय और सुझाव देते और हमारे घरों के किसी भी उत्सव और संस्कार में वह बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े हो हमें अपने आशीषों से भर देते। मुझे अपना बच्चा और फ़ादर का उसके मुख में पहली बार अन्न डालना याद आता है और नीली आँखों की चमक में तैरता वात्सल्य भी जैसे किसी ऊँचाई पर देवदारू की छाया में खड़े हों।

(क) 'परिमल' किसका नाम है?

उत्तर : 'परिमल' एक साहित्यिक संस्था का नाम है।

(ख) 'फ़ादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है।'- पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : प्रस्तुत पंक्ति का आशय है कि जिस प्रकार एक उदास शांत संगीत को सुनते समय हमारा मन गहरे दुःख में डूब जाता है, वातावरण में एक अवसाद भरी निस्तब्ध शांति छा जाती है और हमारी आँखें अपने-आप ही नम हो जाती हैं, ठीक वैसी ही दशा फ़ादर बुल्के को याद करते समय हो जाती है।

(ग) फादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग एक नयी छवि प्रस्तुत की है, कैसे?

उत्तर : प्राय: संन्यासी सांसारिक मोह-माया से दूर रहते हैं। जबकि फ़ादर ने ठीक उसके विपरीत छवि प्रस्तुत की है। परंपरागत संन्यासियों के परिपाटी का निर्वहन न कर, वे सबके सुख-दुख

में शामिल होते। एक बार जिससे रिश्ता बना लेते; उसे कभी नहीं तोड़ते। सबके प्रति अपनत्व, प्रेम और गहरा लगाव रखते थे। लोगों के घर आना-जाना नित्य प्रति काम था। इस आधार पर कहा जा सकता है कि फ़ादर बुल्के ने संन्यासी की परंपरागत छवि से अलग छवि प्रस्तुत की है।

प्र. 7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए। (2x4=8)

1. काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

उत्तर : काशी की अनेकों परम्पराएँ धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है। पहले काशी खानपान की चीज़ों के लिए विख्यात हुआ करता था। परन्तु अब वह बात नहीं रह गई है। कुलसुम की छन्न करती संगीतात्मक कचौड़ी और देशी घी की जलेबी आज नहीं रही है। संगीत, साहित्य और अदब की परंपरा में भी धीरे-धीरे कमी आ गई है। अब पहले जैसा प्यार और भाईचारा हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच देखने को नहीं मिलता। गायक कलाकारों के मन में भी संगत करने वाले कलाकारों के प्रति बहुत अधिक सम्मान नहीं बचा है। काशी की इन सभी लुप्त होती परंपराओं के कारण बिस्मिल्ला खाँ दु:खी थे।

2. लेखक को नवाब साहब के किन हाव-भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?

उत्तर : लेखक के अचानक डिब्बे में कूद पड़ने से नवाब-साहब की आँखों में एकांत चिंतन में खलल पड़ जाने का असंतोष दिखाई दिया। ट्रेन में लेखक के साथ बात-चीत करने के लिए नवाब साहब ने

कोई उत्साह नहीं प्रकट किया। लेखक से कोई बातचीत भी नहीं की और न ही उनकी तरफ देखा। इससे लेखक को स्वयं के प्रति नवाब साहब की उदासीनता का आभास हुआ।

3. बिस्मिल्ला खाँ जीवन भर ईश्वर से क्या माँगते रहे, और क्यों? इससे उनकी किस विशेषता का पता चलता है?

उत्तर : बिस्मिल्ला खाँ भारत के सर्वश्रेष्ठ शहनाई वादक थे। वे अपनी कला के प्रति पूर्णतया समर्पित थे। उन्होंने जीवनभर संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की इच्छा को अपने अंदर जिंदा रखा। वे अपने सुरों को कभी भी पूर्ण नहीं समझते थे इसलिए खुदा के सामने वे गिड़गिड़ाकर कहते- "मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।" खाँ साहब ने कभी भी धन-दौलत को पाने की इच्छा नहीं की बल्कि उन्होंने संगीत को ही सर्वश्रेष्ठ माना। वे कहते थे - "मालिक से यही दुआ है- फटा सुर न बख्शें। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।"

इससे यह पता चलता है कि बिस्मिल्ला खाँ कला के अनन्य उपासक थे।

4. मूर्ति पर कोई स्थाई फ्रेम क्यों नहीं रहता था?

उत्तर : मूर्ति का चश्मा हर-बार कैप्टन बदल देता था। कैप्टन असलियत में एक गरीब चश्मेवाला था। उसकी कोई दुकान नहीं थी। फेरी लगाकर वह अपने चश्मे बेचता था। जब उसका कोई ग्राहक नेताजी की मूर्ति पर लगे फ्रेम की माँग करता तो कैप्टन मूर्ति

पर अन्य फ्रेम लगाकर वह फ्रेम अपने ग्राहक को बेच देता। इसी कारणवश मूर्ति पर कोई स्थाई फ्रेम नहीं रहता था।

5. लेखिका मन्नू भंडारी के पिता रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित करते थे?

उत्तर : 'भटियारखाना' शब्द भट्टी (चूल्हा) से बना है। यहाँ पर प्रतिभाशाली लोग नहीं जाते हैं लेखिका के पिता का मानना था रसोई के काम में लग जाने के कारण लड़कियों की क्षमता और प्रतिभा नष्ट हो जाती है। वे पकाने-खाने तक ही सीमित रह जाती हैं और अपनी सही प्रतिभा का उपयोग नहीं कर पातीं। संभवतः इसलिए लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर संबोधित किया होगा।

प्र. 8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2 × 3 = 6)

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के
माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

(क) माँ बिटिया को किस अवसर पर यह सीख दे रही है और क्यों?

उत्तर : माँ कन्यादान के अवसर पर अपनी बेटी को यह सीख दे रही है। वह चाहती है कि उसकी बेटी उसके अनुभवों से शिक्षा ग्रहण करे तथा सशक्त नारी के रुप में जीवन व्यतीत करे।

(ख) आग के विषय में माँ के कथन का क्या अभिप्राय है?

उत्तर : माँ के कथन का अभिप्राय है कि उसकी बेटी को मानसिक रुप से अत्यधिक दृढ़ होना चाहिए। उसे याद रखना चाहिए कि अग्नि रोटी पकाने के लिए होती है, उसे विपरीत परिस्थितियों में जलने की बात कभी नहीं सोचनी चाहिए।

(ग) माँ ने आभूषणों को स्त्री जीवन के बंधन क्यों कहा है?

उत्तर : माँ ने कहा कि सामान्य आभूषण स्त्री-जीवन का बंधन हैं। नारी के वास्तविक आभूषण तो उसके गुण हैं।

प्र.9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए। (2x4=8)

(क) 'तेल की गागर' के दृष्टांत के माध्यम से कवि क्या भाव प्रकट करना चाहता है।

उत्तर : 'तेल की गागर' के दृष्टांत के माध्यम से कवि निर्लिप्तता का भाव प्रकट करना चाहता है। जिस प्रकार तेल की गागर जल में रहकर भी जल से निर्लिप्त रहती है ठीक उसी प्रकार उद्धव भी जल के मध्य रखे तेल के गागर (मटके) की भाँति हैं, जिस पर जल की एक बूँद भी टिक नहीं पाती। अर्थात् उद्धव श्रीकृष्ण के समीप रहते हुए भी उनके रूप के आकर्षण तथा प्रेम-बंधन से

सर्वथा मुक्त हैं। वे कृष्ण के सानिध्य में रहते हुए भी वे श्री कृष्ण के प्रेम से सर्वथा मुक्त रहे। श्री कृष्ण के प्रति कैसे उनके हृदय में अनुराग उत्पन्न नहीं हुआ? वे प्रेम बंधन में बँधने एवं मन के प्रेम में अनुरक्त होने की सुखद अनुभूति से पूर्णतया अपरिचित रहे।

(ख) 'असमय खांड न ऊखमय' से क्या अभिप्राय है?

उत्तर : 'असमय खांड न ऊखमय' से अभिप्राय परशुराम की वास्तविकता से अनभिज्ञता से है। यहाँ पर विश्वामित्र मन-ही-मन सोच रहे हैं कि परशुराम ने कितनी सरलता से यह कह तो दिया कि अपने फरसे से वे लक्ष्मण का वध कर देंगें। परंतु परशुराम जिस बालक को गन्ने की खांड समझ रहे हैं, वह तो वास्तव में लोहे से बना खांडा अर्थात् तलवार के समान है जिसे काट पाना इतना सरल नहीं है।

(ग) 'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं, कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

उत्तर : गर्मी की चिलचिलाती धूप में रेत के मैदान दूर पानी की चमक दिखाई देती है हम वह जाकर देखते है तो कुछ नहीं मिलता प्रकृति के इस भ्रामक रूप को 'मृगतृष्णा' कहा जाता है। इसका प्रयोग कविता में प्रभुता की खोज में भटकने के संदर्भ में हुआ है। इस तृष्णा में फँसकर मनुष्य हिरन की भाँति भ्रम में पड़ा हुआ भटकता रहता है।

(घ) फसल को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

उत्तर : फसल के लिए भले ही पानी, मिट्टी, सूरज की किरणें तथा हवा जैसे तत्वों की आवश्यकता है। परन्तु किसानों के परिश्रम के बिना ये सभी साधन व्यर्थ हैं। यदि किसान अपने परिश्रम के द्वारा इसे भली प्रकार से नहीं सींचे तब तक इन सब साधनों की सफलता नहीं होगी। अतः यह किसान के श्रम की गरिमा ही है जिसके कारण फसलें इतनी अधिक बढ़ती चली जाती हैं।

(ङ) संगतकार की आवाज़ में एक हिचक-सी क्यों प्रतीत होती है?

उत्तर : संगतकार जब मुख्य गायक के पीछे-पीछे गाता है। वह अपनी आवाज़ को मुख्य गायक की आवाज़ से अधिक ऊँचें स्वर में नहीं जाने देते ताकि मुख्य गायक की महत्ता कम न हो जाए। यही हिचक (संकोच) उसके गायन में झलक जाती है। वह कितना भी उत्तम हो परन्तु स्वयं को मुख्य गायक से कम ही रखता है। लेखक आगे कहता है कि यह उसकी असफलता का प्रमाण नहीं अपितु उसकी मनुष्यता का प्रमाण है कि वह शक्ति और प्रतिभा के रहते हुए स्वयं को ऊँचा नहीं उठाता, बल्कि अपने गुरु और स्वामी को महत्त्व देने की कोशिश करता है।

प्र. 10. निम्नलिखित पूरक पुस्तिका के प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए। [3×2=6]

1. देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी कई तरह से कठिनाईयों का मुकाबला करते है। सैनिकों के जीवन से किन-किन जीवन-मूल्यों को अपनाया जा सकता है? चर्चा कीजिए।

उत्तर : 'साना साना हाथ जोडि' पाठ में देश की सीमा पर तैनात फौजियों की चर्चा की गई है। वस्तुतः सैनिक अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह ईमानदारी, समर्पण तथा अनुशासन से करते है। सैनिक देश की सीमाओं की रक्षा के लिए कटिबद्ध रहते है। देश की सीमा पर बैठे फ़ौजी प्रकृति के प्रकोप को सहन करते हैं। हमारे सैनिकों (फौजी) भाईयों को उन बर्फ से भरी ठंड में ठिठुरना पड़ता है। जहाँ पर तापमान शून्य से भी नीचे गिर जाता है। वहाँ नसों में खून को जमा देने वाली ठंड होती है। वह वहाँ सीमा की रक्षा के लिए तैनात रहते हैं और हम आराम से अपने घरों पर बैठे रहते हैं। ये जवान हर पल कठिनाइयों से जूझते हैं और अपनी जान हथेली पर रखकर जीते हैं। हमें सदा उनकी सलामती की दुआ करनी चाहिए। उनके परिवारवालों के साथ हमेशा सहानुभूति, प्यार व सम्मान के साथ पेश आना चाहिए।

इन सैनिकों के जीवन से हमें अटूट देशप्रेम, त्याग, निष्ठा, समर्पण आदि मूल्यों को जीवन में अपनाना चाहिए।

2. नाक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा का द्योतक है। यह बात पूरी व्यंग्य रचना में किस तरह उभरकर आई है? लिखिए।

उत्तर : ‘नाक’ इज्जत-प्रतिष्ठा, मान-मर्यादा और सम्मान का प्रतीक है। शायद यही कारण है कि इससे संबंधित कई मुहावरे प्रचलित हैं जैसे - नाक कटना, नाक रखना, नाक का सवाल, नाक रगड़ना आदि। इस पाठ में नाक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा का द्योतक है। यह बात लेखक ने विभिन्न बातों द्वारा व्यक्त की हैं। रानी एलिज़ाबेथ अपने पति के साथ भारत दौरे पर आ रही थीं। ऐसे

मौके में जॉर्ज पंचम की नाक का न होना उसकी प्रतिष्ठा को धूमिल करने जैसा था। ये सभी सरकारी तंत्र विदेशियों की नाक को ऊँचा करने को अपने नाक का सवाल बना लेते हैं। यहाँ तक की जॉर्ज पंचम की नाक का सम्मान भारत के महान नेताओं एवम साहसी बालकों के सम्मान से भी ऊँचा था। इस पाठ में सरकारी तंत्र की मानसिकता की स्पष्ट झलक भी दिखाई देती है।

3. आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं।

उत्तर : गाँवों में हरे भरे खेतों के बीच वृक्षों के झुरमुट और ठंडी छांवों से घिरा कच्ची मिट्टी एवं छान का घर हुआ करता था आज ज्यादातर गाँवों में पक्के मकान ही देखने मिलते है। पहले गाँवों में भरे पूरे परिवार होते थे। आज एकल संस्कृति ने जन्म लिया है। अब गाँव में भी विज्ञान का प्रभाव बढ़ता जा रहा है; जैसे-लालटेन के स्थान पर बिजली, बैल के स्थान पर ट्रैक्टर का प्रयोग, घरेलू खाद के स्थान पर बाज़ार में उपलब्ध कृत्रिम खाद का प्रयोग तथा विदेशी दवाइयों का प्रयोग किया जा रहा है। पहले की तुलना में अब किसानों (खेतिहर मज़दूरों) की संख्या घट रही है। अब गाँवों में भी आधुनिकता ने अपने पैर पसार लिए हैं। अब गाँवों में आधुनिकता से भरी सुविधाएँ जैसे टीवी, मोबाइल, इंटरनेट सभी सुविधाएँ पहुँच गई हैं। जिसके कारण गाँवों की जीवनशैली भी बदल गई है लोग स्वास्थ्य और स्वच्छता की ओर जागरूक हो गए हैं। पहले गाँव में लोग बहुत ही सीधा-सादा जीवन व्यतीत करते थे। आज वहाँ भी बनावटीपन देखने मिलता है।

खंड - घ

[लेखन]

प्र. 11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए। [10]

'जहाँ चाह वहाँ राह'

प्रत्येक व्यक्ति के मन में किसी न किसी लक्ष्य को पाने की कामना रहती है। कई बार हम अपने लक्ष्य तक पहुँचने में असफल होते हैं और अक्सर इसका दोष हम दुर्भाग्य को देते है। हमारी असफलता के दोषी हम खुद है, हमें हार माने बिना दृढ़ इच्छा और योजना के साथ फिर लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए। असफलता सफलता की सीढ़ी है, हमें कभी हार नहीं माननी चाहिए कि यह असंभव है।

नेपोलियन के अनुसार असंभव शब्द मूर्खों के शब्दकोश में पाया जाता है। मनुष्य को स्थिर इच्छाशक्ति को बनाए हुए, अंतिम साँस तक अपने लक्ष्य तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए।

अँग्रेजी भाषा में भी कहा जाता है, **Where there |s a w|ll, there |s a way"** पाणिनी, संस्कृत भाषा के महान वैयाकरण जब बच्चे थे और उसकी प्रारंभिक शिक्षा के लिए उसकी माँ उन्हें शिक्षक के यहाँ ले गई, शिक्षक ने कहा उनकी हथेली में शिक्षा के लिए कोई रेखा नहीं है उन्होंने अपने हाथ में चाकू से रेखा खीची और उस शिक्षक के पास गए। यह देखकर शिक्षक ने कहाँ दृढ़ इच्छाशक्ति से कुछ भी प्राप्त करना असंभव नहीं है। इसीलिए कहते है- 'जहाँ चाह वहाँ राह'।

'कामकाजी महिलाएँ अपेक्षाएँ और शोषण'

हमारे भारतीय समाज में नारी को नारायणी कहा गया है। नारी को देवी का दर्जा दिया गया। कहा गया है जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता

निवास करते हैं। प्राचीन काल से ही नारी को 'गृह देवी' या 'गृह लक्ष्मी' कहा जाता है। प्राचीन समय में नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था। परंतु मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति दयनीय हो गयी। उसका जीवन घर की चारदीवारी तक सीमित हो गया। नारी को परदे में रहने के लिए विवश किया गया।

आज वर्तमान युग में नारी पुरुष समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर प्रगति पथ पर आगे बढ़ रही है।

नर और नारी एक सिक्के के दो पहलु की तरह है। स्त्री-पुरुष जीवन-रूपी रथ के दो पहिये हैं, इसलिए पुरुष के साथ साथ स्त्री का भी शिक्षित होना जरुरी है। यदि माता सुशिक्षित होगी तो उसकी संतान भी सुशील और शिक्षित होगी। शिक्षित गृहणी पति के कार्यों में हाथ बँटा सकती है, परिवार को सुचारु रूप से चला सकती है।

आज वह हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही है। परंतु स्त्री पुरुष एक समान के नारे लगाने के बावजूद समाज में नारी का शोषण हो रहा है। स्त्रियों को पुरुष से कम वेतन दिया जाता है। साथ ही पुरुष प्रधान में समाज में अपनी योग्यता के बावजूद आगे बढ़ने में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

साथ ही घर की सभी जिम्मेदारियों को भी निभाना पड़ता है, बच्चों की देखभाल और सास-ससुर की सेवा अलग से करनी पड़ती है। इस के लिए पुरुषों को आगे बढ़कर उसकी मदद करनी चाहिए, उसकी कामयाबी के लिए उसे सराहना चाहिए।

नारी का योगदान समाज में सबसे ज्यादा होता है। बच्चों के लालन,पालन, शिक्षा से लेकर नौकरी तक नारी हर क्षेत्र में पुरुषों से आगे है। अतः नारी को कभी कम नहीं आँकना चाहिए और उसका सदा सम्मान करना चाहिए।

नारी त्याग और ममता की मूर्ति है उसे सम्मान और प्यार मिलेगा तो निश्चित वह हमें बेहतर भविष्य प्रदान करेंगी।

प्र. 12. निम्न विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र लेखन करें। [5]

1. हिन्दी-दिवस पर विद्यालय में आयोजित गोष्ठी का विवरण देते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक पत्र के संपादक को प्रकाशनार्थ पत्र लिखिए।

सेवा में,

नवभारत टाईम्स

मुंबई

दिनाँक - 15 सितम्बर, 2015

विषय : हिन्दी गोष्ठी सभा की जानकारी प्रकाशनार्थ हेतु पत्र।

महोदय,

मैं आपके इस प्रसिद्ध अखबार के द्वारा हमारे विद्यालय में आयोजित की गई हिन्दी गोष्ठी की जानकारी को प्रकाशन करवाना चाहता हूँ। हमारे विद्यालय में 14 सितम्बर हिन्दी दिवस के अवसर पर गोष्ठी का आयोजन किया गया था। जिसमें अनेक सम्मानीय हिन्दी लेखकों ने भाग लिया था। गोष्ठी का विषय 'वर्तमान परिवेश में हिन्दी की महत्ता' था। इस विषय पर सबने अपने–अपने विचारों से छात्रों को जानकारी से ओतप्रोत और लाभान्वित कर दिया।

आशा करता हूँ आप जल्द से जल्द हमारी इस गोष्टी को अपने पत्र में स्थान देगें।

भवदीय

रमाकांत शुक्ला

अथवा

2. दसवीं की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद आप क्या करना चाहते हैं? अपने भावी कार्यक्रम के बारे में अपने मित्र को पत्र लिखिए।

प्रिय अमर

नमस्ते।

कल ही परीक्षा का बोझ सिर से उतरा। मेरे सभी प्रश्नपत्र काफी अच्छे गए हैं और करीब 95 अंक प्राप्त होने की आशा है।

कल से यह सोच रहा हूँ कि दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद क्या करुँगा। मेरे पिताजी चाहते है मैं भी उनकी तरह वकालत करूँ। मैं इंजीनियर बनना चाहता हूँ। यह मेरा बचपन का सपना है।

मैं पिताजी को मनाने का प्रयास करूँगा। फिर भी इस विषय में तुम्हारी राय जानना चाहूँगा। तुम्हारे पत्र का इंतजार करुँगा। शेष कुशल है।

तुम्हारा मित्र

राज

प्र. 13. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 25 से 30 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए। [5]

1. आयुर्वेदिक दन्तमंजन के विज्ञापन लिए विज्ञापन बनाइए।

आयुर्वैदिक हरा दन्तमंजन

रखे अपने दांत, मसूढ़े स्वस्थ

हरे दन्तमंजन के संग

2. गुलाब जामुन मिक्स के विज्ञापन बनाइए।

माँ का प्यार गुलाब जामुन मिक्स

अब गुलाब जामुन घर पर बनाना हुआ आसान,

माँ का प्यार गुलाब जामुन मिक्स के साथ